गायक

K. A. Rahiman — II P. D. C.

वे अपने इलाके के उस सुन्दर, स्थान में पेड के नीचे बैठकर मीठी तान आलाप कर रहे थे। 'वयलिन' का माधुर्य बहाती हुई उस गानगंगा में पेडों के पत्ते मर्मरारव से स्पन्नन कर रहे थे। पार्श्व पेड के कोशों से गानतरंगें नृत्य कर रही थीं। उनके फूल सुन्दर गान सुनते सुनते मीठी मधु बहाने की कोशिश कर रहे थे। उसी समय एक कुंज के नीचे से, एक सांप फन फैलाता हुआ तान के अनुसार दोनों तरफ नाच रहा था। उसके सिर पर एक रत्न टिमटिमा रहा था। रात के आखिरी यामों में कुछ पक्षी इधर-उधर पंख फटकाती हुई उड रही थीं। उन गायक की अंगुलियों से मीठी तानें खेल रही थी।

* * *

एक दिन वे एक कविता लिख रहे थे। उनका एक दोस्त 'रामलाल' वहाँ आया। कविता के बारे में वे दोनों कुछ चर्चा करने लगे।

रामलाल ने कहा : "मेरी कविता लोगों के दिल में आनन्द भर देती है। धर्मोपदेश देनेवाली है। मेरा गान सुनने केलिए सभी लोग 'गान-सभा' में आते हैं। गान का माधुर्य पी लेते हैं और लौट जाते हैं। लेकिन तुम्हारी कविता उतनी अच्छी नही। उसको कुछ और भी सुधारना है। मैं कविता और गायन की सारी बातें जानता हूँ।"

लेकिन जयलाल ने जवाब दिया :

"किसी को भी कविता लिखने में, गीत सुनाने में और लोगों का प्रेम-भाजन बनने में घमंड करने की जरूरत नही। मैं भी तुम्हारी ही तरह गाता हूँ। तुम्हारे जैसे कविता करता हूँ। इस में कोई आश्चर्य नही।"

रामलाल कुछ तुनक कर बोला :

"तुम्हारी कविता उस नहर में बहाने लायक है। मेरी तो लोगों के दिमाग में मस्ती भर देनेवाली और सारी प्रकृति को जगानेवाली है। अगर तुम मेरी कविता में गलती निकालते और लोगों के दिल को पकड लेते तो, मैं तुम्हें इस दुनिया से भेज दूँगा। खबरदार.....!!"

इस प्रकार दोनों मित्रों में शत्रुता का बीज बोया गया। लेकिन 'गायक' जयलाल की शत्रुता का बीज सूख गया। रामलाल का तो पलकर शत्रुता का एक बडा पेड बन गया और उससे ज़हर छिडकने लगी !

* * *

इलाके के सारे स्त्री-पुरुष और बच्चे जयलाल की मीठी तान सुनना चाहते थे। वे किसी भी स्थान पर जाकर उनकी बांसुरी और 'वयलिन' की तान सुनने को तैयार थे।

एक दिन वे कविता रच कर गाने के उद्देश्य से रात को इलाके के एक कोने में गये। चन्द्रमा उनको देखने केलिए मेघ के टुकडों को हटाते निकल आया। वे आये और उस पेड के नीचे बैठे।

चन्द्रमा खुशी से चांदनी छिटकाते हुए हँसने लगा !! पेड के फूल सुरभि फैलाने लगे...! एक कोयल पेड पर से 'कू...कू...' करती रहती थी ! वे बांसुरी बजाने लगे और साथ ही गाने लगे। पेड हवा में उस तान के अनुसार नाचने लगे ! सारी प्रकृति निश्शब्द हो गयी। स्वर्गीय माधुरी बहने लगी ! खेतों में प्रकृति-गान-देवता नाचने लगी॥

अँचानक एक चाकू उनकी छाती पर आ घुसी...! वे एक तरफ गिर पडे और कराहने लगे...!! उनकी आत्मा इस दुनिया से उठने लगी। उनका जीवन सारे लोगों को छोडने लगा। उसे देखकर 'पैन' पेड की शाखा टूट कर गिर पडी...!!

कोयल की आवाज़ बन्द हो गयी...!!
कुछ पत्ते स्वयं गिरने लगे...!!
सारी प्रकृति मौन-मुग्ध हो गयी...!
रामलाल दबे पांव घर पहुँचा...!!

चाकू नदी में फैक दी !!

* * *

दूसरे दिन उनके मृतशरीर को लेते हुए, इलाके के सारे लोग अफसोस में डूबे हुए उस सडक पर से गुज़र रहे थे। रामलाल भी उस सडक के एक तरफ से चल रहा था। गुजरते समय एक वृक्ष ने उस लाश पर कुछ फूल गिरा दिया...!! एक नींबू के पेड की शाखा ने उस मृतदेह पर फेरकर अपनी अफसोस प्रकट की...!! हवा ने उस मृतदेह को आखिर देखने केलिए, उस पर डाले हुए कपडे को हटाने की कोशिश की....!!

जाते जाते एक तरफ से, एक सांप फण फैलाकर फुफकारता हुआ रामलाल पर कूद पडा...!!! एक बार शीघ्रता से काटा और अपना सारा क्रोध उस पर लगा दिया। वह जलदी दौडकर गायब हुआ। कुछ लोग रामलाल को लेकर घर चले गये। प्रकृति ने रामलाल को उनके साथ जाने नही दिया...!!

पश्चात्ताप

N. C. Kamalavathi — II B. Sc.

अध्यापक जी क्लास में आ गये। पीछे के बंच पर बैठने वाले विद्यार्थी "हाँ, हाँ" करने लगे। अध्यापक को क्रोध आया और उन लडकों से बाहर जाने को कहा। मैं भी उन्ही में से एक था। अब मुझे वह दिन याद आता है।

मैं क्लास में एक बडा खतरनाक लडका समझा जाता था। अध्यापक जी सभी समय मुझ पर प्रत्येक ध्यान रखते थे और 'इमबोशिषन' का बोझ मुझ पर डालते थे। सारा समय परीक्षा केलिए पढने को अध्यापक जी मुझे उपदेश देते थे। लेकिन उस समय मैं उन बातों पर कान नहीं देता था। और मेरा ध्यान लडकियों के पीछे जाने में था। क्लास में एक "हीरो" बनना ही मेरा उद्देश्य था। अध्यापक मेरे लिये एक प्रश्न भी नहीं था। मैं खुशी से कालेज में दिन काट रहा था। इसी बीच में परीक्षा भी हो गयी और जब रिसल्ट आ गया तब मेरा नंबर अखबार में न था। इससे मुझे विशेष दुख भी नहीं आया। क्योंकि ऐसा आराम से मनमाना जीवन बिता ने से मुझ को यह सहना पडा। अब क्या करना है? मेरे मन में यह सवाल उठा। घर वापस जाने को मुझे लज्जा आती थी। इसलिए मैं ने देश छोड बाहर जाने का निश्चय किया।

अब मैं बंबई के एक बडे फैक्टरी का मैनेजर हूँ। जब मेरी चिन्ता यहाँ तक आ गयी तब मेरी पत्नी एक खत लेकर कमरे में घुस आयी। उसके पिता बीमार थे और तुरंत ही जाना था। मैं उसके पिता के बारे में कुछ विवरण देना चाहता हूँ। बात यह हुई कि जब में बंबई से घर वापस आया तब मेरी शादी की बात तय हुई और मेरी वधू मेरे अध्यापक के एक ही बेटी थी। मुझ को भी विश्वास नहीं आया। क्लास में से जो अध्यापक मुझे अकसर बाहर करते थे और जिन की मैं हँसी उडाया करता था उनके सामने फिर भी जाने में मुझे लज्जा आ गयी। विधाता की आज्ञा तो थी। इसलिए मैं ने सिर झुकाकर उसको स्वीकार किया।

अध्यापक के सामने जाने पर पश्चात्ताप की ज्वालायें मेरे दिल में जलती रही। हमेशा उनकी दृष्टि से दूर रहने का मैं प्रयत्न करता रहा। क्लास में अध्यापक के हँसी उडाने का दर्द अब मुझे सहना पडा।

अब घर जाना ज़रूरी है। जब हम घर पहुँचे तब ससुर जी की बीमारी नाजुक हो गयी थी। उनकी हालत बहुत शोचनीय थी।

वे मृत्यु के वक्त में थे। यह दृश्य देखने पर मेरी आखों में आँसू भर गये। और मैं पश्चात्ताप-विवश हो उन के पैरों में गिर पडा। आँसुओं से मैं ने उनके पैर धोये। कुछ समय के बाद अध्यापक जी मुझ से कहने लगे "बेटा मैं चला जाता हूँ। अब इस घर का सारा भार मैं तुम पर छोड देता हूँ। मेरे शिष्य, तुम्हारा उज्वल भविष्य हो। भगवान तुम को माफी दे। ईश्वर पर विश्वास रखो। किये हुए अपराध के बारे में मत सोचो। भला कार्य करने में ध्यान रखो"। हृदय के कोने में दुख का बादल उठने लगा। घर में दुख का मूक वातावरण था।

जलनेवाले दीपक को बुझाकर हवा कमरे से बाहर चली गयी। मेरे प्रिय अध्यापक की (एक समय जिन को मैं सभी तरह की तकलीफें देता था) जान पखेरू पिंजरा छोड चली। दुख के उस साम्राज्य से मैं धीरे बाहर आया। आकाश में चमकने वाले चन्द्रमा ने बादलों की ओट में अपना मुह छिपाया।

विधि विलास

Beevi M. — II B. Sc.

कोलेज वार्षिकोत्सव का दिन था। सब उस सन्तोषपूर्ण दिवस का स्वागत करने के लिए उस कलालय के सभी अध्यापक और विद्यार्थी तैयार थे। सब के मन में आनन्द और उत्साह भरा था। अध्यापक लोग विद्यार्थियों को अपनी अपनी कला के प्रदर्शन में प्रोत्साहित कर रहे थे।

अपने मुख्य अतिथि का स्वागत करने के लिये कोलेज और उसका आसपास खूब सजा हुआ था। प्रिन्सिपल और अध्यापकों की देखरेख में उस समारोह को विजयपूर्ण बनाने के लिए सारे विद्यार्थी और विद्यार्थिनियां कठिन यत्न करते थे।

कालेज यूनियन के सेक्रटरी 'बाबू' को उन दिनों साँस लेने की भी फुर्सत न मिलती थी। उस दिन की सारी परिपाटियो में बाबू का एक अच्छा स्थान होता था। प्रिन्सिपल और अध्यापकों से सलाह लेने में, नाटकों और दूसरी प्रदर्शनियों में अपना पार्ट ठीक करने में और कई कार्यों में वह निरंतर लगा हुआ था; आराम का नाम तक न था।

कालेज के सारे विद्यार्थी बाबू को अत्भुत और आदर से देखते थे। वह कोमल युवक अपने कलालय की सारी लडकियों के आराधनापात्र बन गये थे। अपनी बुद्धिकुशलना, खेल कूद की अभिरुचि, और सबसे बढकर सत्स्वभाव इन बातों से बाबू अध्यापकों एवं सहपाठियों की आँख का तारा बन गया था।

वार्षिकोत्सव के दिन सबेरे वह छात्रालय के अपने कमरे में बैठकर कुछ न कुछ लिख रहा था। उस समय उसका मन दिन के कलाप्रकटनों की सफलता के विचार में डूबा था। उस समय उसका दोस्त रमेश कमरे में आ गया और फिर दोनों अपने कामों में लग गये।

शाम का समय था। कालेज का वातावरण आनन्द से भरा था। अतिथि का उपक्रम भाषण और सेक्रटरी का धन्यवाद हो गया। सब खुश हुए। उस की विजय में सब बाबू की प्रशंसा करते थे।

फिर कलाप्रकटनों का समय आया। 'ग्रीनरूम' में अभिनेता विद्यार्थी कठिन यत्न कर रहे थे। नाटक शुरु हो गया। नाटक का प्रधान नायक बाबू ही था। एक गरीब और असहाय युवक की भूमिका में बाबू रंगमंच पर विराज मान था। सब लोग नाटक देखने में तन्मय थे।

उस समय पर्दे के पीछे से कुछ अव्यक्त शबद सुनाई पडा। कोई ऊँची आवाज़ में 'बाबू' 'बाबू' पुकार कर घबरा रहे थे। लेकिन बाबू अपने को भी भूलकर नाटक के अभिनय में लगा था। अचानक सब लोगों को आश्चर्य और संभ्रम में डालते हुए पर्दा गिर पडा। कारण समझने के लिये सभी उत्सुक हुए।

कुछ देर के बाद मैक से ऊँची आवाज़ निकली लोगों को मालूम हो गया कि बाबू को अपने घर से टेलग्राम आने से नाटक अचानक खतम किया गया है। कारण कोई जान न सका। एक टैक्सी बुलाकर बाबू तुरन्त घर की ओर रवाना हुआ। वहाँ जितने लोग उपस्थित थे सब के सब दुख और संभ्रम के समुद्र में डूब गये।

दूसरे दिन प्रभात में कालेज में यह वार्ता फैल गयी कि बाबू के पिता अचानक किसी दुर्घटना का शिकार होकर मर गये हैं। उसके संभ्रम से घर पहुँचते ही बाबू बेहोश होकर गिर पडा और अभी उठा नहीं।

यह खबर पाते ही कुछ विध्यार्थी बाबू के घर पहुँच गये। उस घर का वातावरण शोकपूर्ण था। अपने प्रिय पुत्र के सामने बैठकर उसकी माँ रो रही थी और सब लोग दुख सागर में गोते मारते थे।

डाक्टर के बुलाने पर मालूम हुआ कि बाबू का जो अचानक 'शोक' लगा उससे उसके मस्तिष्क की शक्ति कम हो गयी हैं और उसका होश नष्ट हुआ।

फिर उस असहाय और निराधार युवक को देखकर, जो शक्तिलयों में एक पागल के समान घूमता फिरता था कोई कह न सकता था कि वह वही कोमल युवक हैं जो अपने कालेज में सबके आदर और आराधना का पात्र था।

विज्ञान का अध्ययन

E. V. P. Abdurahiman Kutty — I P. D. C.

आज हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं, जिसके लोग चन्द्र नामक उपग्रह में जाकर रहना चाहते हैं। इसके लिये दुनिया के कुछ बडे देशों के वैज्ञानिक दिन रात मेहनत करते हैं। यह इस दुनिया की एक ओर की बात है। दूसरी ओर नयी नयी बँमें, मिस्सैल आदि बनाकर दुनिया को विपत्तियों का निमंत्रण करते हैं। ये बातें, नयी दुनिया की हैं।

हज़ारों वर्ष पहले इसी दुनिया में लोग बसते थे, जो अंधविश्वास और पुरानी रूढियों का मार्ग पकडकर जीवन बिताते थे। उन लोगों को विज्ञान की तरफ ध्यान नही था या वे विज्ञान की खोज नहीं करते थे। उन दिनों में लोग कच्चा माँस और कच्ची तरकारी खाकर वन में घूमते फिरते दिन बिताते थे।

प्रतिदिन लोगों ने अपना ध्यान अपने जीवन सुखमय बनाने में लगाया उसके लिये वे खोज करते लगे। इसलिये उन्हों ने आग को खोज निकाला मांस खाने की आदत दूर की। इसी तरह उनकी खोज ज़ारी रही। इसके फलस्वरूप आज दुनिया में सभी कोने में विज्ञान फैल गये हैं।

किसी भी बीमारी को दूर करने के लिये आज यहाँ दवा है। उन के अभावसे लोग पुराने ज़माने की तरह बीमारियोंके शिकार हो कर तडप तडप कर मर जाते। इसलिये विज्ञान ने बीमारी को दूर करने की बडी सहायता की हैं।

पहले ज़माने में आदमी को एक स्थान से दुसरे स्थान तक जाने के लिये पैदल जाना ही मार्ग था। उसमें कई तरह की कठिनाइ सहन करनी पडती। लेकिन आज हमें एक स्थान से हज़ारों मील दूर तक पहुँचने के लिये कुछ घंटों का समय ही काफी है। इसलिये विज्ञान ने दूरीको कम किया है। इसी तरह आज एक शब्द दुसरे देशों में उसी मिनुट में पहुँच सकता हैं। ये सब विज्ञान की ही देन हैं। वैज्ञानिक ढंग से फल व तरकारी बहुत पैदा की जा सकती हैं।

रेलगाडी, मोटोर, हवाइ जहाज़, रेडियो, टेलिफोण, सिनेमा, बमें, रोकट, पेनिसिलिन आदि सब विज्ञान के कुछ देन हैं। जो भिन्न-भिन्न कार्यों में मनुष्य को सहायता पहुँचाते हैं। रेडियो आधुनिक विज्ञान का अत्यन्त उपयोगी आविष्कार है। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक मार्कौणी ने इसको खोज निकाला था। आधुनिक आविष्कारों में सबसे मुख्य वे हैं, जिनके जरिये यात्रा में सुविधायें उत्पन्न की गयी है। ये सब किसी एक व्यक्ति का ही आविष्कार नही। लेकिन विज्ञान के अनुसंधान में लगे हुए हज़ारों वैज्ञानिकों की परंपरागत सेवा का परिणाम है।

दुनिया क्षणिक है। क्यों कि आज अमेरिका, रूस, चीन आदि प्रबल देशों के हाथ में जो बडे बडे अणु बम हैं वे दुनिया को पाँच मिनिट में राख बना सकती हैं। विज्ञान से कुछ दोष हैं, उससे और अधिक फायदे भी होते हैं।

हम सब को विज्ञान की खोज के लिये जीवन बिताना चाहिये। हमारे पूर्वजों की मेहनत से हम आज सुख से यहाँ रह सकते हैं। अपने पीछे आने वाली संतानों के लिये हमें भी कुछ बातों का आविष्कार करना ज़रूर चाहिये। हमारा ध्यान

विज्ञान की तरफ़ होना है। वह विज्ञान किसी भी तरह के हों। दूसरे राष्ट्रों से तुलना करने पर हम को यह बात साबित होती है, कि भारत विज्ञान के विषय में पीछे पड गया है। इसका एक प्रधान कारण यह था कि हम यहाँ गुलाम थे। हमारे पूर्वजों का ध्यान विज्ञान की ओर न रहा। वे अध्यात्मिक उन्नति में अपना सारा ध्यान लगाते रहे। आज हम को भी विज्ञान में आगे बढना है। यही अपना ध्येय मानकर हम को विज्ञान की शिक्षा पाना है, खोज करना हैं।

हम को विज्ञान के मार्ग दिखाने के लिये कुछ संस्थायें ज़रूरी है। इसके लिये भारत जैसे गरीब देशों को कुछ मुश्किल होता है। हम को इस बात में खुशी है, कि आज कल भारत सर्कार विज्ञान के अध्ययन के लिये करोडों रुपये खर्च करती हैं। हमें अपनी यह प्रतीक्षा सफल करनी चाहिये, कि हमारे देश विज्ञान के क्षेत्र में आगे से आगे बढ जाय। इसके लिये हमें अपना सब कुछ कुरबान करना है। ईश्वर भी हमारे प्रयत्न में सहायता करे।